श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता नंद छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

गणधर वलय स्तवन

दोहा - चौसठ ऋद्धि धारते, अर्हत् गणीं ऋशीष।
पूजा अर्चा कर विशद, झुका रहे हम शीश।।

बुद्धी ऋद्धी से जीवों में, बुद्धि का हो पूर्ण विकास।
फैला मोह तिमिर इस जग में, उसका हो जाता है ह्रास।।
बल ऋद्धि के द्वारा तन में, बल की वृद्धि होय अपार।
योद्धा कोई भी आ जावे, मुनिवर से न पावे पार।।1।।
परम विक्रिया ऋद्धी पाकर, धारण करते रूप अनेक।
ऋद्धी धारी मुनि के पद में, वन्दन करता माथा टेक।
फूल पात तन्तु जल फल पर, चलते चारण ऋद्धीधार।
गगन गमन भी करते मुनिवर, तिनको वन्दन बारम्बार।।2।।
तपकर तप ऋद्धी प्रगटाते, जिससे तप करते हैं घोर।
उग्र महातप घोर पराक्रम, तप्त दीप्त तपते अतिघोर।
औषधि ऋद्धीधारी मुनि के, तन का मल हो जाय विशेष।
करने से स्पर्श व्याधियाँ, नशतीं क्षण में शीघ्र अशेष।।3।।
रस ऋद्धीधारी मुनिवर के, कर में भोजन आते शुद्ध।
सर्व रसों से पूरित होता, मंगलकारी पूर्ण विशुद्ध।
ऋद्धी है अक्षीण महानश, जिससे वस्तु हो न क्षीण।
अरू अक्षीण महालय ऋद्धी, में आलय होता अक्षीण।।4।।

दोहा - तीर्थंकर गणधर मुनि, ऋद्धीधार ऋशीष।
विशद झुकाते भाव से, जिन चरणों हम शीश।।

24 तीर्थंकर गणधर मुनि पूजन

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादि से हमने, पर तृषा शान्त न हो पाई।
अति लगा हुआ है मिथ्या मल, हमने आतम न चमकाई।।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन के वन घिस गये कई, पर शीतलता न मिल पाई।
सद् दर्शन की शुभ कली हृदय, में नहीं हमारे खिल पाई।।
चन्दन घिसकर मलयागिरि का, हम आज चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चदनं निर्व. स्वाहा।

भर-भर कर थाल तन्दुलों के, कई खाकर बहुत नशाए हैं।
अक्षय पद जो है अखण्ड वह, प्राप्त नहीं कर पाए हैं।।
अब अक्षय पद के हेतु यहाँ, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

तृष्णा की खाई है असीम, वह पूर्ण नहीं हो पाती है।
है काम वासना दुखदायी, भव-भव में हमें सताती है।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

यह क्षुधा वेदना जीवों को, सदियों से छलती आई है।
खाकर मिष्ठान अनादी से, न तृप्ति हमें मिल पाई है।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ दीप तिमिर का नाशक है, मिथ्यातम को न हरण करे।
चैतन्य प्रकाशित करता वह, रत्नत्रय को जो ग्रहण करे।।
अब विशद ज्ञान का दीप जले, हम दीप जलाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं नि. स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाने से, आकाश सुवासित होता है।
जब तीव्र कर्म का वेग बढ़े, चेतन शक्ति तब खोता है।।
हम अष्ट कर्म के दहन हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं नि. स्वाहा।

यह सरस मधुर फल खाने से, रसना की चाह बढ़ाते हैं।
हम चाह दाह के नाश हेतु, यह फल तव चरण चढ़ाते हैं।।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, तव हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं।।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं नि. स्वाहा।

हमने अनर्घ पद पाने का, सदियों से भाव बनाया है।
किन्तु विषयों में फँसने से, वह पद हमने न पाया है।।
अब पद अनर्घ के हेतु प्रभो ! यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

24 गणधर के अर्घ्य

(प्रथम वलयः)

वृषभादि जिन में हुए, गणधर ऋषि चौबीस।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।1।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नब्बे गणधर अजितनाथ के, 'सिंहसेन' जी रहे प्रधान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, का हम करते हैं सम्मान।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।2।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अजिनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर पञ्च एक सौ जानो, श्री सम्भव जिनवर के साथ।
'चारुदत्त' गणधर मुनिवर कई, के पद झुका रहे हम माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।3।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री संभवनाथस्य 'चारुदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनवर के गणधर, 'वज्रचमर' हैं एक सौ तीन।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, कहे गये हैं ज्ञान प्रवीण।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।4।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अभिनन्दन नाथस्य 'वज्रचमरादि' त्रयाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री वज्रादि' एक सौ सोलह, सुमतिनाथ के रहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।5।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री सुमतिनाथस्य 'वज्रादि' षोडशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चमरादि' एकादश एक सौ, पद्मप्रभु के हुए गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।6।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री पद्मनाथस्य 'चमरादि' दशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च ऊन इक शतक गणी थे, श्री सुपार्श्व जिनवर के साथ।
'बलदत्तादी' अन्य मुनीश्वर, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।7।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधिक नब्बे गणधर थे, चन्द्र प्रभु के साथ महान्।
'वैदर्भादि' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री चंद्रप्रभस्य 'वैदर्भादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक अस्सी गणधर शुभ, पुष्पदन्त के साथ रहे।
'श्री नागादि' अन्य मुनीश्वर, श्रेष्ठ प्रभु के भक्त कहे।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री पुष्पदंतस्य 'नागादि' अष्टाशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्ताधिक अस्सी गणधर शुभ, शीतलनाथ के हुए महान्।
'कुंथु आदि' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं सम्मान।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।10।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'कुंथादि' सप्ताशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीधर्मादि' रहे सतत्तर, जिन श्रेयांस के गणधर साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर झुका रहे हम अपना शीश।।11।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य 'श्रीधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंदर आदि छियासठ शुभ, गणधर वासुपूज्य के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।12।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वासुपूज्यस्य 'मंदरादि' षट्षष्टिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल नाथ के 'जय' आदि शुभ, पचपन गणधर रहे महान्।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।13।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास।
'अरिष्टादि' कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।14।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादिक' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिष्ट सेनादि' तेतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
विशद साधना करने वाले, ऋद्धिधारी हुए ऋशीष।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना शीश।।15।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ स्वामी के गणधर, 'चक्रायुध' आदी छत्तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।16।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनवर के गणधर, 'स्वयंभ्वादि आदि थे' पैतीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।17।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री कुम्भ' आदी थे तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।18।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य 'श्री कुंभादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री विशाख' आदि अठबीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।19।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के गणधर जानो, अष्टादश 'मल्ली' आदी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते हैं सबकी व्याधी।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।20।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'मल्लि' आदि अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमीनाथ के सत्रह गणधर, जानो तुम 'सुप्रभआदि'।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते हैं सबकी व्याधी।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।21।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नमिनाथस्य 'सुप्रभादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरदत्तादी' ग्यारह गणधर, नेमिनाथ के साथ कहे।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के चरणों मम् माथ रहे।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।22।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमिनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर श्रेष्ठ 'स्वयंभू' आदि, पार्श्वनाथ के दश जानो।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, मुनियों को भी पहिचानो।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।23।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इन्द्रभूति' आदि गणधर थे, ग्यारह महावीर के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम माथ।।
चार ज्ञान के धारी अनुपम, गणधर हैं मुनियों के नाथ।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में माथ।।24।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबीस के गणधर, चौदह सौ उनसठ जानो।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाने वाले, शुभ मंगलकारी मानो।।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, अतिशयकारी रहे ऋशीष।
अर्घ्य चढ़ाकर उनके चरणों, झुका रहे हम अपना शीश।।25।।

ॐ ह्रीं वृषभ सेनादि एकोन षष्ट्याधिक चतुर्दश शत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

48 ऋद्धियों के अर्घ्य

(द्वितीय वलय:)

सोरठा – णमो जिणाणं आदि, ऋषिवर पावें ऋद्धियां।
पाने मरण समाधि, पुष्पाञ्जलि करते विशद।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, सर्वज्ञ प्रभु जग हितकारी।
हे गणधर स्वामी ! जिनवर के, तुम कृपा करो हे त्रिपुरारी।।
निर्ग्रन्थ मुनीश्वर ऋद्धीधर, तव करते हैं हम आह्वानन।
दो हमको शुभ आशीष विशद, हम करते हैं शत्–शत् वन्दन।
हे नाथ ! पुजारी चरणों में, तव पूजा करने आए हैं।
पूजा को अनुपम द्रव्यों के, यह थाल सजाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट विचक्राय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

'णमो जिणाणं' श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन्।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, जिनवर पद शत् शत् वन्दन।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धिधारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बोल 'णमो सव्वोहि जिणाणं' सर्वावधि पाये जो ज्ञान।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान्।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ 'णमो अणंतोहि जिणाणं' की महिमा है अपरम्पार।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनिपद में, वन्दन मेरा बारम्बार।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धिधारी जिन संत।
उनके चरणों वन्दन करके, हो जाए कर्मों का अंत।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धि धारी।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो पादाणुसारीणं' पादानु सारिणी ऋद्धिवान।
तप बल से यह ऋद्धि पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो संभिण्ण सोदारणं', संभिन्न श्रोतृत्त्व के धारी।
उनके चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सयं बुद्धाणं' कहकर, स्वयं बुद्धि ऋद्धि धारी।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पत्तेय बुद्धाणं' कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि पाऊँ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, इस भव में न भटकाऊँ ।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बोहिय बुद्धाणं' कहते, बोधि पाने हेतु महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करके गुणगान।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो उजु मदीणं' कहके, ऋजु मति मनः पर्यय ज्ञान।
परम साधना करने वाले, मोक्षमहल में करें प्रयाण।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुल मति पा लेते ज्ञान।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी।।
तीर्थंकर जिन के गणधर की, गौरव गाथा गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सोरठा)

णमो अट्ठंग महा, निमित्त कुशलाणं जानिए।
महा निमित्तक ज्ञान, मुनिवर पाते मानिए।।
करते हम कर जोर, वन्दन उनके चरण में।
होके भाव विभोर, शिव पद पाने के लिए।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुशलाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं', ऋद्धिधर स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ति पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ध्याऊँ 'णमो विज्जाहराणं', ऋद्धिधर नामी।
इसको पाने वाला बनता, मुक्ति पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो चारणाणं' ऋद्धिधर, हैं त्रिभुवन नामी।
उनकी भक्ति करने वाला, हो उसका स्वामी।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पण्ण समणाणं' जानो, मुक्ति पथ गामी।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!

सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आगास गामीणं' वाले, ऋद्धि के स्वामी।
गगन गमन करते हैं भाई, मुक्ति पथगामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आसी विसाणं' ऋद्धि, मुनिवर ने पाई।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरु ने, प्रभुता दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दिट्ठी विसाणं', ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो उग्ग तवाणं' जानो, ऋद्धि यह भाई।

उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि, से मुनीवर भाई।
दीप्त तपों को अतिशय तपते, मुनीवर सुखदाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि, से ऋषिवर भाई।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धि, पाकर के भाई।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि, ऋषिवर जो पाई।

घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धि सुखदाई।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धि यह पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धि सुखदाई।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धि धर भाई।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाल-छन्द

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल-बोल मैटो सब गम।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी।

मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धि पाकर मैटो गम।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं', मोह त्याग कर धारो सम।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मेटता पूर्ण रहा।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धि होती है सक्षम।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं', पाते हैं जो धारें यम।
सर्वौषधि ऋद्धि धारी, व्याधि मेटते हैं सारी।।

मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शेर-छन्द

'णमो मण बलीणं' यह, ऋद्धि पाए हैं।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धि, ऋषिवर जगाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो वचि बलीणं', यह ऋद्धि जानिए।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषि को ये मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो काय बलीणं', इस ऋद्धि के धनी।
पाते हैं मुनि शक्ति, ऋद्धि से अति घनी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खीर सवीणं', यह ऋद्धि जो पाए।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सप्पि सवीणं', इस ऋद्धि के धारी।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महुर सवीणं', यह ऋद्धि जानिए।
मधुर आहार रुक्ष भी, हो जाए मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो अमिय सवीणं', यह ऋद्धि पाए हैं।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आर्या-छन्द

'णमो अक्खीण महाणसाणं' यह, ऋद्धि है अतिशयकारी।
कमें नहीं आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो वड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धि बढ़ती सुखदाई।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धि ऋषिवर जी पाते।
सिद्धायतन के दर्श मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाय दणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं, बुद्धि ऋद्धि धारी।
वर्द्धमान महावीर प्रभु सम, बन जाते हैं अविकारी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर वलय में णमो जिणाणं, आदि ऋद्धियाँ कहीं महान्।
अड़तालिस यह मंत्र श्रेष्ठ हैं, भाव सहित कीन्हा गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम शत-शत् वन्दन।
मुक्ति पद को प्राप्त करें हम, किया भाव से यह अर्चन।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं आदि विशिष्ट ऋद्धि धारक श्री गणधर स्वामिने नम: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं श्री गणधरेभ्यों नम:।

समुच्चय जयमाला

दोहा - **तीर्थंकर गणधर मुनी, होते पूज्य त्रिकाल।**
चौंसठ ऋद्धीवान की, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

परिशुद्ध हृदय जिनका निर्मल, गुणगण के अनुपम कोष रहे।
तीर्थंकर जिनके गण नायक, आगम में गणधर देव कहे।।
जो मति श्रुत अवधि मन:पर्यय, शुभ चार ज्ञान के धारी हैं।
जो भौतिक तत्त्वों के ज्ञाता, अरु पूर्ण रूप अविकारी हैं।।1।।
स्याद्वाद ज्ञान गंगाधारी, पर मत का खण्डन करते हैं।
अनेकांत भाव पाने वाले, गुरु पञ्च महाव्रत धरते हैं।।
जो अंग पूर्व के धारी हैं, अष्टांग निमित्त के ज्ञाता हैं।
शुभ दिव्य देशना झेल रहे, जग में भव्यों के त्राता हैं।।2।।
गुरु अष्ट ऋद्धि के धारी हैं, जिन प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
शुभ स्वप्न शकुन ज्योतिष ज्ञाता, तन परमौदारिक पाते हैं।।

जो अनेकांत के धारी हैं, एकान्त ध्यान में लीन रहे।
हैं परम अहिंसा व्रतधारी, गणधर जिनेन्द्र के श्रेष्ठ कहे।।3।।
गुरु घोर पराक्रम के धारी, जो घोर परीषह सहते हैं।
हर एक विषमता को सहकर, जो शान्त भाव से रहते हैं।।
तीर्थंकर जिन के दिव्य वचन, ॐकार रूप से आते हैं।
किरणों की प्रखर रोशनी सम, गणधर में आन समाते हैं।।4।।
जिन वचन महोदधि है अनन्त, जिसका होता न अंत कहीं।
शत् इन्द्र चक्रवर्ति आदी, जिन संत समझते पूर्ण नहीं।।
गणधर गूंथित जैनागम ही, भवि जीवों का ज्ञान प्रदाता है।
रत्नत्रय धर्म प्रदायक है, जो मोक्ष महल का दाता है।।5।।
जिनधर्म धारकर भवि प्राणी, कर्मों का पूर्ण विनाश करें।
फिर अनन्त चतुष्टय को पाकर, जिन केवल ज्ञान प्रकाश करें।।
हम तीन काल के तीर्थंकर, गणधर को शीश झुकाते हैं।
अब गुण पाने जिन गणधर के, हम चरण शरण को पाते हैं।।6।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिन पद अनुगामी, गणधर स्वामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय गण के स्वामी, तुम्हें नमामी, द्रव्य भाव श्रुतधर नामी।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पद नमूँ, गणधर करूँ प्रणाम।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाऊँ मुक्तिधाम।।

।।पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

गणधर की आरती

तर्ज – भक्ति बेकरार है ...

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।
चौबीस जिन के गणधर की हम, करते जय–जयकार हैं।।
जिन तीर्थंकर केवल ज्ञानी, अनन्त चतुष्टय पाते जी।
स्वर्ग लोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी।।
गणधर जी ..

दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं।
चार ज्ञान के धारी गणधर, उसको झेला करते हैं।।
गणधर जी ...

नर त्रिर्यंच अरू देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं।
अपनी–अपनी भाषा में गुरु, अलग–अलग समझाते हैं।।
गणधर जी ...

दीक्षा धारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं।।
गणधर जी ...

विशद साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं।
बुद्धि विक्रिया चारण आदि, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।
गणधर जी ...

प्रशस्ति

दोहा – परमेष्ठी को नमन् कर, जिन श्रुत को उरधार।
चैत्य जिनालय धर्म को, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई छन्द)

मध्य लोक के मध्य में जानो, जम्बूद्वीप श्रेष्ठ पहिचानो।
आर्य खण्ड उसमें सुखदायी, भारत देश रहा शुभ भाई।।
वर्तमान चौबीसी जानो, तीर्थंकर की पदवी मानो।
दिव्य देशना देते भाई, भवि जीवों को है सुखदाई।।
महिमा अपरम्पार कही है, जग में तारण हार रही है।
ॐकार मय भाई जानो, समवशरण में खिरती मानो।।
गणधर जो भी होते भाई, दिव्य ध्वनि झेलें सुखदाई।
होते हैं वह ऋद्धीधारी, चार ज्ञान के हैं अधिकारी।।
मोक्ष मार्ग के होते नेता, रत्नत्रय के शुभ अभिनेता।
भवि जीवों को राह दिखाते, मोक्षमार्ग पर बढ़ते जाते।।
उनकी भक्ति करने आये, विशद भाव से शीश झुकाए।
हमको मोक्ष मार्ग मिल जाए, उर में ज्ञान कली खिल जाए।।
सम्वत् बीस सौ चौसठ भाई, अश्विन शुक्ल की चौदस पायी।
दो हजार सन् आठ कहा है, वर्षायोग का समय रहा है।।
मालपुरा नगरी है पावन, पार्श्वनाथ मंदिर मन भावन।
गणधर वलय की पूजा भाई, रचना पूर्ण यहाँ हो पाई।।
मिलकर सभी विधान कराओ, भाई अतिशय पुण्य कमाओ।
अपना जीवन सफल बनाओ, अनुक्रम से फिर मुक्ति पाओ।।
अक्षर मात्रा की त्रुटि कोई, इसमें जो भी पाओ सोई।
ज्ञानी जन सब शोध कराएँ, हमको उसका बोध कराएँ।।

दोहा – अन्तिम है यह भावना, होय कर्म का अन्त।
संयम धारणकर विशद, बनें जीव शिव संत।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंसनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।
काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।
काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।
मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।
प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

– ब्र. आस्था दीदी